Part 1

प्रश्न 24. कविता संग्रहमे संकलित मधुप जीक ‘ छुतहर ’ शीर्षक कविताक सारांश लिखू ।

उतर - विधापतिक बाद मैथिलीकेँ लोकप्रिय बनयबामे सर्वाधिक योगदान देनिहार कवि जँ किओ छथि त ओ थिकाह कविचूड़ामणि काशीकांत मिश्र ‘ मधुप ’ । हिनक छोट - पैघ करीब दू - दर्जन पोथी प्रकाशित अछि । काव्यशैलीक दृष्टिएँ मधुप जी सतत् नव - नव प्रयोग करैत रहलाह । जहिना देशज शब्दक प्रयोगमे मधुप जी काव्य रचना कैल , तहिना तत्सम शब्दक प्रयोगसँ रचनाकेँ रमनगर बनयबामे सिध्दहस्त छलाह । विषय - वस्तुक दृष्टिएँ हिनक काव्य परिधि बहुत विशाल अछि । जाहि विषय केँ पूर्वमे कविगन हेय दृष्टिसँ देखैत आबैत छलाह तकरो अपन काव्य प्रतिभाक चमत्कारसँ साहित्यमे प्रतिष्टित कैल । छुतहर हिनकर एहि कोटिक रचना छैन्हि ।

मिथिलामे छुतहर आ घरहड़ शब्द प्रचलित छल । जाहि कोनो माटिक बर्तनकेँ आछोप लोक छुबि दैत छल वा ओकरासँ छुआ जाइत छल से छुतहर भ जाइत छल जे नहि छुआएल रहैत छल ओ घरहड़ बनल रहैत छल । कारण पूर्वमे लोकोकेँ दू श्रेणीमे बाँटल गेल छल । एक जीनका पानि चलैत छल । दोसर जीनकर पानि चलैत छल ओ अछोप कहाबैत छल । कविक कथ्य अछि सभक निर्माण त एके समान पंच तत्वसँ भेल अछि तखन एहि तरहक भेद - भाव कियैक ?

अस्पृश्य भेलहुँ कै कोन पाप ?

मृतिका एक एके कुम्हार ,

ओ दण्ड चक्र चीवर सम्हार ।

आकार एक क्यो मंगल घट

गोबरौड़ बनल हम सही ताप ॥

जखन एके माटि - पानिसँ कुम्हार बर्तन बनाबैत अछि त एककेँ जखन कोनो अछोप लोकसँ छुआ जाइत अछि त ओ बर्तन गोबरौड़ सदृश एक कात मे उपेक्षित पड़ल रहैत अछि । दोसर वैह कुमहारक बनाओल माटिक बर्तन मंगल घट मे पूजित होइत अछि । तहिना मनुक्खोक स्थिति अछि एके ईश्वर सभक निर्माण कैल , जन्म देलनि तखन छुत - अछुअतक भेद कियैक ? सभ मनुक्खकेँ शरीरमे एके

रंग रक्त ,मांस ,मज्जा । सब एके रंग आगि पानि ताप आ शीतलताक अनुभूति करैत अछि । सब दु:खसँ दु:खी आ सुखसँ सुखानुभूति करैत अछि । सबकेँ जीवन आ मृत्यु एके समान तखन ईश्वरक रचित मनुक्खमे भेद - भाव कियैक ? एक घरहड़ धैल मृगनयनिक डॉर आ माथ पर चढि आदर पबैत अछि । एक धैल छतहर भ स्पर्शसँ दूर उपेक्षित फेंकल अछि ।

" हगे कुकरो केँ सुत्बथि पलंग,

पी मघ बिलोचन करथि रंग ।

से देखि हमर मुख करथि घृणा ,

दुर्भाग्यक पड़ि गेल केहन छप ?

छुतहर बुझि लोक हमर उपेक्षा करैत छथि , मुदा जे कुकुरकेँ पलंग सुतबैत छथि ।मधपान करैत छथि , तिनकासँ हमरो घृणा होइत अछि । मुदा ओ एहि सभ्य समाजमे कहाँ अपवित्र बुझल जाइत छथि । संसारमे ऊँच - नीच , छुत - अछुत आदिक भेद व्यर्थ थिक ।कुमहारक आवामे बिलाइक बच्चा बंद भ गेल । आवामे आगि पजारल गेल । सब बर्तन पाकल मुदा ओ बिलाड़िक बच्चा कहाँ जरल - मरल । ईश्वरक केहन कृपा ओहि बिलाड़िक बच्चा पर छलैक । ई भेद - भाव , योग - जाप सब झूठ थिक । एकमात्र ईश्वर सत्य अछि ।

घट- घटमे वासी ब्रहा एक छथि । मुदा अग्यांताक कारण लोक अनेक बुछैत छथि । वेद - शास्त्रकेँ ,छुइल जलकेँ अपवित्र - अपवित्र कहि प्रलाप करैत छथि । ई व्यर्थक प्रलाप थिक । ओ पवित्र , ई अपवित्र ई त घोतक थिक । ईश्वर त एक छथि , जे सभक घट (हृदय) मे वास करैत छथि । ओ छुत - अछुतक कहाँ भेद करैत छथि । अन्तमे कवि बहुजन हिताय ,बहुजन सुखाय केँ भाव्सँ कहैत चाथि । यथा -

हो सदिखन संसारक सुधार ,

पतितौक बनथि क्यो कर्णधार ।

उध्दार सुधारकसँ न हमर ,

ई सभ्य समाजक थिक प्रताप ॥